

# काली चालीसा

By:- templepedia.in

॥ दोहा ॥

जय काली जगदम्ब जय, हरनि ओघ अघ पुंज ।  
वास करहु निज दास के, निशदिन हृदय निकुंज ॥

जयति कपाली कालिका, कंकाली सुख दानि ।  
कृपा करहु वरदायिनी, निज सेवक अनुमानि ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय काली कंकाली । जय कपालिनी, जयति कराली ॥  
शंकर प्रिया, अपर्णा, अम्बा । जय कपर्दिनी, जय जगदम्बा ॥

आर्या, हला, अम्बिका, माया । कात्यायनी उमा जगजाया ॥  
गिरिजा गौरी दुर्गा चण्डी । दाक्षाणायिनी शाम्भवी प्रचंडी ॥

पार्वती मंगला भवानी । विश्वकारिणी सती मृडानी ॥  
सर्वमंगला शैल नन्दिनी । हेमवती तुम जगत वन्दिनी ॥

ब्रह्मचारिणी कालरात्रि जय । महारात्रि जय मोहरात्रि जय ॥  
तुम त्रिमूर्ति रोहिणी कालिका । कूष्माण्डा कार्तिका चण्डिका ॥

तारा भुवनेश्वरी अनन्या । तुम्हीं छिन्नमस्ता शुचिधन्या ॥  
धूमावती षोडशी माता । बगला मातंगी विरव्याता ॥

तुम भैरवी मातु तुम कमला । रक्तदन्तिका कीरति अमला ॥  
शाकम्भरी कौशिकी भीमा । महातमा अग जग की सीमा ॥

चन्द्रघण्टिका तुम सावित्री । ब्रह्मवादिनी मां गायत्री ॥  
रुद्राणी तुम कृष्ण पिंगला । अग्निज्वाला तुम सर्वमंगला ॥

मेघस्वना तपस्विनि योगिनी । सहस्राक्षि तुम अगजग भोगिनी ॥  
जलोदरी सरस्वती डाकिनी । त्रिदशेश्वरी अजेय लाकिनी ॥

पुष्टि तुष्टि धृति स्मृति शिव दूती । कामाक्षी लज्जा आहूती ॥  
महोदरी कामाक्षि हारिणी । विनायकी श्रुति महा शाकिनी ॥

अजा कर्ममोही ब्रह्माणी । धात्री वाराही शर्वाणी ॥  
स्कन्द मातु तुम सिंह वाहिनी । मातु सुभद्रा रहु हु दाहिनी ॥

नाम रूप गुण अमित तुम्हारे । शेष शारदा बरणत हारे ॥  
तनु छवि श्यामवर्ण तव माता । नाम कालिका जग विरव्याता ॥

अष्टादश तब भुजा मनोहर । तिनमहँ अस्त्र विराजत सुन्दर ॥  
शंख चक्र अरू गदा सुहावन । परिघ भुशण्डी घण्टा पावन ॥

शूल बज्र धनुबाण उठाए । निशिचर कुल सब मारि गिराए ॥  
शुभ निशुभ दैत्य संहारे । रक्तबीज के प्राण निकारे ॥

चौंसठ योगिनी नाचत संगा । मद्यपान कीन्हैउ रण गंगा ॥  
कटि किंकिणी मधुर नूपुर धुनि । दैत्यवंश कांपत जेहि सुनि-सुनि ॥

कर खप्पर त्रिशूल भयकारी । अहै सदा सन्तन सुखकारी ॥  
शव आरूढ़ नृत्य तुम साजा । बजत मृदंग भेरी के बाजा ॥

रक्त पान अरिदल को कीन्हा । प्राण तजेउ जो तुम्हिं न चीन्हा ॥  
लपलपाति जिक्हा तव माता । भक्तन सुख दुष्टन दुःख दाता ॥

लसत भाल सेंदुर को टीको । बिखरे केश रूप अति नीको ॥  
मुँडमाल गल अतिशय सोहत । भुजामल किंकण मनमोहन ॥

प्रलय नृत्य तुम करहु भवानी । जगदम्बा कहि वेद बखानी ॥  
तुम मशान वासिनी कराला । भजत तुरत काटहु भवजाला ॥

बावन शक्ति पीठ तव सुन्दर । जहाँ बिराजत विविध रूप धर ॥  
विन्धवासिनी कहूँ बड़ाई । कहूँ कालिका रूप सुहाई ॥

शाकभरी बनी कहूँ ज्वाला । महिषासुर मर्दिनी कराला ॥  
कामारव्या तव नाम मनोहर । पुजवहिं मनोकामना द्रुतर ॥

चंड मुँड वध छिन महं करेउ । देवन के उर आनन्द भरेउ ॥  
सर्व व्यापिनी तुम माँ तारा । अरिदल दलन लेहु अवतारा ॥

खलबल मचत सुनत हुँकारी । अगजग व्यापक देह तुम्हारी ॥  
तुम विराट रूपा गुणखानी । विश्व स्वरूपा तुम महारानी ॥

उत्पत्ति स्थिति लय तुम्हरे कारण । करहु दास के दोष निवारण ॥  
माँ उर वास करहु तुम अंबा । सदा दीन जन की अवलंबा ॥

तुम्हारो ध्यान धैरे जो कोई । ता कहँ भीति कतहुँ नहिं होई ॥  
विश्वरूप तुम आदि भवानी । महिमा वेद पुराण बखानी ॥

अति अपार तव नाम प्रभावा । जपत न रहन रंच दुःख दावा ॥  
महाकालिका जय कल्याणी । जयति सदा सेवक सुखदानी ॥

तुम अनन्त औदार्य विभूषण । कीजिए कृपा क्षमिये सब दूषण ॥  
दास जानि निज दया दिखावहु । सुत अनुमानित सहित अपनावहु ॥

जननी तुम सेवक प्रति पाली । करहु कृपा सब विधि माँ काली ॥  
पाठ करै चालीसा जोई । तापर कृपा तुम्हारी होई ॥

॥ दोहा ॥

जय तारा, जय दक्षिणा, कलावती सुखमूल ।  
शरणागत 'भक्त' है, रहहु सदा अनुकूल ॥

### काली चालीसा के लाभ

नकारात्मक शक्तियों और शत्रुओं से रक्षा ।  
भय, बाधा और रोग दूर होते हैं ।  
साहस, शक्ति और मानसिक स्थिरता मिलती है ।  
आध्यात्मिक जागृति और साधना में प्रगति होती है ।  
काली माँ की कृपा से मनोकामना सिद्ध होती है ।

### काली चालीसा पाठ विधि

मंगलवार और शनिवार को पाठ बेहद शुभ ।  
काली माँ की तस्वीर/प्रति के सामने दीपक जलाएँ ।  
काली मंत्र “ॐ क्रीं काली” का जप करें ।  
काले तिल, गुड़ और नारियल अर्पित करें ।  
रोजाना पाठ करने से विशेष लाभ मिलता है ।